

५१०/४२

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुक्के.

—: इस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

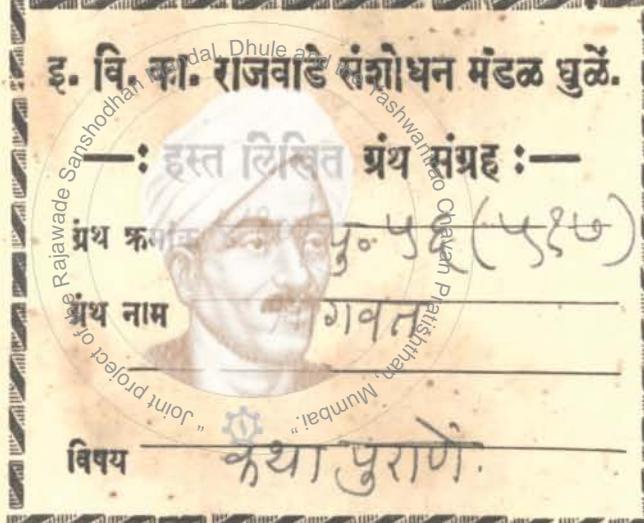
ग्रंथ क्रमांक पु. ५६ (५८८)

ग्रंथ नाम

गवत

विषय

कथा पुराणे.



अश्रीगणेशायनमः॥श्रीकृष्णायनमः॥जयब्रह्मदेवाधिदे  
वा॥भोगीसिगुरत्वेसुहावा॥विश्विविश्वात्मायेसम्भावा॥  
१ नुक्रपेनेजेकाजवलेकिसि॥२ जेविश्विंजोविश्वास्ति॥  
त्याजविश्वास्तिव्यपासी॥३ तनावच्छासेप्रसंन्बहोसी॥  
तेषायांपासींप्रवशु॥४ चरणारपणवपादृष्टि॥५ अ-  
सोहुसुटल्यागाटियेकसद्गुरुज्ञापोटि॥६ उयउटिप्रेवे  
रालै॥७ यालागितुनिजात्ममाये॥याहुतुजवपाहा॥

"Joint Project of the Royal Asiatic Society, London, the State Central Library, Dhaka, and the Yashodhara Chatterjee Trust, Calcutta. Manuscript No. 1000. Date: 18th century. Number: 1000."

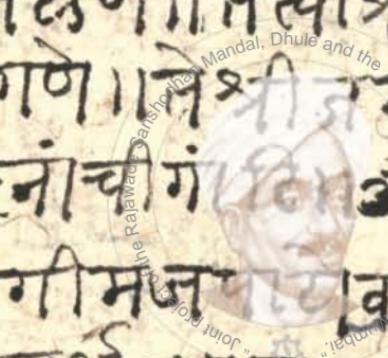
२  
जाये॥ जवबापपणतुजमाजिआहे॥ आभीनवकायसा  
गोवे॥ ४। तेथेमातापिलादोहि॥ वेगकालिआसतीज  
नी॥ तेहोहियेककरनि॥ येकाजनार्दनिनिजलाके॥ ५॥  
आजहुभयश्वेतश्चेहाच॥ भ्रमजागकानिजवोधा  
चा॥ ६॥ रामिवराजिगणदुर्घविच्छुचंडसु॥ ऐसाजा  
ककारवडुवसु॥ निजविलासुलेवर्षीषु॥ ७॥ यापरि  
मजनीजेवाळा॥ ८॥ लेणेलेवविसीस्वलिळा॥ ९॥ आणीले  
वाडवीसीनीज बाळा॥ परिनीत्यनवासोहळा॥ १०॥

३

३

इलेपणावा सोहला ॥ पाहसीवे क्वेकारूपादृष्टिगम  
बाकुकालेव विजेत्रेण ॥ तेत्याग्रमाणं कायजाण ॥ तोसो  
हक्कान्तेनेभोगणे ॥ तेश्चित्तनार्दनेभोगीजे सुखम् ॥  
अपुत्त्याचित्तनांच्चिगं दिः आनुष्ठाधात्तलीमा  
शाकं दिः यालागीमजा एवा दिः ॥ निजात्मदृष्टिस्य  
यथावे ॥ १० ॥ समर्थज्याचीजनकुमत्यासि मानीसक  
क्लेशु यिकात्तनार्दनेयेतु ॥ आमान्यज्ञाधीकुमान्यकी  
जे ॥ ५ ॥

(2A)



(3)

३

वाक्कस्यें बोलो नणे ॥ त्यासि साता सीक विवन्न ने ॥ ते सी  
 ग्रंथकथा कथने ॥ स्वयं जनाद ने बोल विजे ॥ १२ ॥ तणे न  
 बल के लेयथे ॥ मुरवा हाति रीभाग वता ॥ से रिव बोहुत वि  
 ल प्रावृत्त ॥ यिकादृशा इह वा नाथा ॥ १३ ॥ परिसो नीप्रध  
 माध्यावा ॥ उगाचिरा हि द्वारा वा ॥ पुढ़े कथा कथनि  
 टाका हि जाभी प्रवादि सोना ॥ १४ ॥ आपण करा वा प्र  
 आ ॥ तवहा सांगे लशील शानीधाना ॥ याला गिराजा

३

मेन॥टिलाधन नीवाज॥७॥जाणो नीत्याचा आसी  
स्त्रावृ॥बे लता जाका शुकदेवा॥तो अणेमोक्षाचाप्र  
सावो॥तो हा आधावे॥परिक्षीति ८९६॥हायेकाद  
इआको किके॥क्षेका ही आधीक क्षेका॥पदापदि  
मुक्तिसुरवे॥लगउलंस्ति निजसाधका॥१॥येसेये  
कलावचनभरा जाका सावधान॥मुक्तिसुविजा  
डिगहन॥आवधानेकान सर्वं गेके ला॥१८॥असा

(38)

(4)

४

देखो निपरि क्षीलि ॥ शुकआयं तर्हविविलिं ॥ जो त्रष्णे  
आवधानमन्तीमि एक निक्षीलि गुत्थज्ञान ॥ १९९॥ द्विती  
याध्याइ नीरोपण ॥ नारदवस्तु द्वसवादजाण ॥ निमि  
जायनवन्वेपश्च ॥ तुरयवन्नपभागवतधर्म ॥ २००  
श्लोक ॥ श्रीरुक्तुवाच ॥ गावृदभुजगुप्तायांदाराव  
लांकुराद्वह ॥ अवात्सीनारदोभीक्षणवृष्णोपाससन  
लात्वसः ॥ ॥ १ ॥ ईकाजो मुक्तमाजिजानगण ॥ जो

४

ब्रह्मचर्यसिरोमणी ॥ योगीवंदीगिमुगुटस्थानि ॥ जो  
भक्तमंडणि अतिश्रेष्ठ ॥ २७ ॥ जो ब्रह्मरसाचासमुद्र ॥ जो नी  
जावी धाकापुर्णचंद्र ॥ तो वो नाजालाशुकयोगीद ॥ श्रा  
तानेरं दकुरुवंशीचा ॥ २८ ॥ गाल्याणव्यासाचाजो नी जगु  
रु ॥ जो नी मासा ही परम ॥ श्रीनारदमाह मुनिश्चर ॥  
सासि जात्यादन श्रीकृष्ण भजनि ॥ २९ ॥ द्वारके हुनि स्वयं  
श्रीकृष्ण ॥ पीडारका पारविमुनिगंग ॥ तथु जिनारदजा

(५४)

पण ॥ द्वारके सीजाण पुनर्पुन नायेति ॥ रथम होकोंगे द्वारके  
जाए ॥ नरिघ भय कवि काक द्वारा तु अजधे स्वयं श्रीदृष्टि  
नाथु ॥ ज्ञासे नादा तिज सा पथर्य ॥ २५ ॥ दक्षरापनारदा  
सीपाहि । मुहुर्मुहुराहने ॥ गई तोराप हरि की तीनी  
त्राहि ॥ यालागी पोडि ॥ तीन नी छु ॥ २६ ॥ उमाकी की  
तीनी गाई जे की तिर्तो द्वारकव से स्वयं श्री पैति । तिथे  
इपवाधची नचले प्राप्ती ॥ यालागी नित्यवराजि ना

(5A)

रदाचीतेधे॥५॥ नारदासीषुण्डिलइनान्॥ त्यासीको  
 कृष्णमूर्गि वध्यान्॥ श्रीकृष्णदेहेचितन्यधन्॥ या  
 लागीश्रीकृष्णभजन नहस्ती॥ २८॥ यापरिश्रीकृष्ण  
 भजन॥ मुक्तांसीपठिये उन्॥ तासीनभजेजाभाग्यकोण॥  
 तेंचीनीरापणक्षुकसां॥ २९॥ लोक॥ कौनुराजन्दिनि  
 यवान्मुकुद्वरणं बुजं॥ नभजेत्सर्वतोमृत्कृतपात्यम  
 मरोत्तमः॥ ३०॥ टीका॥ ऐकं बापा न पवया॥ क्षेत्र निति

६ ⑥

गमादेहायया ॥ जोनभजे श्रीवृष्णराया ॥ तोगीकीला  
माय जालिदुःखेव ॥ ३० ॥ उपाभगवं तालरुणि ॥ माथाधर  
निपायवणि ॥ सदाशीवेवेसदामसणी ॥ महास्मरानि नि  
जवलि ॥ ३१ ॥ पोटाजाक्षरुनन् ॥ इतराचापाडुताकवण ॥  
देहायुनि नारायण ॥ ३२ ॥ पूर्णमृत्युग्रलु ॥ ३३ ॥ सा  
उभेश्रीवृष्णरुण ॥ ईद्रा दिद्रोकरितो भजन ॥ तेदे  
वस्तुकग्रहतपूर्ण ॥ माभजत्याचेमरणकोणवारि ॥ ३४ ॥

आसे निइ ह्रिय पारव्य पूर्ण ॥ जो न भजे श्रीकृष्ण चरण ॥ त्या  
सी सर्वत्र बाधी मरण ॥ क्षेण क्षण निर्दि कि ॥ ३४ ॥ तो नारद मा  
हामुनि श्वर ॥ मुक्त होउ नि मजनत मर ॥ द्वार के सी वसे नीरजर ॥  
लोची श्रीकृष्णा सी ऊंडि ॥ ३५ ॥ क्षेक ॥ तमे कदा नुदे  
वधी च सुदे वो गठा गत ॥ अनि तं भुख मा सी न मभिद्य दम  
ब्रवी तद् ॥ ३ ॥ टिका ॥ धन्य धन्य तो नारद ॥ ज्या सी सर्वत्र  
गे चिदु ॥ सर्वदां हारि ना साचादु दु ॥ तणे परमानंदु सदो दि  
दु ॥ ३६ ॥

(6A)

जो श्रीकृष्णचां आवउता ॥ ज्यासीश्रीकृष्णआवेत्सर्वथा ॥  
ज्याचेनि संगेतत्कृता ॥ नीसमुक्तताजउलिजीवा ॥ ३७॥ तोना  
रडयेकवेका ॥ स्वानंदाचीयाक्रिता ॥ आलावसुदेवाकीयारा  
उकालपोदेस्यो निडोक्काहारिमात्का ॥ ३८॥ किले सांद्रागनम  
ब्रावेसोंघातलेंवरासने ॥ ब्रह्मद्विपुजन ॥ श्रद्धासंपू  
र्णभाडिले ॥ ३९॥ नारडुतोचीनारायण ॥ यूणविश्वासूक  
रिपुजन ॥ हेमपात्रीचरणक्षाकण ॥ मधुपक्वविधीपुर्णफूला

४

५

के लिः ॥४०॥ पुजा करनी सावधानि ॥ वसुदेव वेसो निसुखा  
सानि ॥ द्वृद्ध आसन सुखा नोनि ॥ काय जाल्हा दोनि बोलत् ॥४१॥  
श्लोक ॥ वसुदेव उवाच ॥ नगन त्रूप वतोया त्रास्वस्त्रये सर्व  
देहिनाः ॥ द्वृपणान्यथा त्रोहत्तमश्लोकवर्त्मना ॥४२॥  
टिका ॥ स्वल्पीलाकृपा कै ॥ लुप्ति ॥ निषेपरम सभाग्यजा  
लेसी ॥ तु मने निभाग मनेभोग्मि ॥ तु न द्वृत्यस्वामी सु  
निधमान्ने ॥४३॥ चुकलीयानीजजननि ॥ बाँच कदिन

४०

४१

४२

४३

दिसेजनी॥ लासीमातेच्याऊगमनी॥ संगोपेमनीनीर्भ  
रू॥ ८ लाहुनिश्चेष्टतुमचीयात्रा॥ नित्यसुखवेदेति शुभमात्रा॥  
सविलातुहिमहीवीचरा॥ निःनोद्धाराक्वागानि॥ ४४७ मा  
तेचाऊगमनिनीजबाबू॥ इ शेषत्सगीनीचनवासोहका॥  
तुमचीयात्रादिनासकका॥ गविस्वल्लिला निजात्मस्त्रव॥ ४५॥  
माता सुखवेदेत्तेनश्वर॥ निलानि॥ तुमचाऊगमनीजाने  
स्वर॥ नित्यचिलुरूपचिन्मात्रा॥ पुरात्मरभोगावा॥ ४६॥ तु  
हिमभागवतधर्ममार्गगामी॥ तेचीतुमचीभेटिकाहो॥

आलीजिपूण्यकोटिनीकामी॥ प्रयागसगमीके लिया॥४७॥  
नारदानुभगवद्वप। अनुसीभेदिकरिनीः व्यापद्वनुवादपा  
के लिया आल्य॥ स्वये वित्त्वा दैर्घ्यसावि॥४८॥ अनुसीनिभप  
लिसमहिमाजामुपै॥ न अठवधभाक्तिप्राप्तप्रति  
स्त्रेनिभक्तिनागवद्वपात् वित्त्वा दैर्घ्यसपनिज्ञनिष्ट॥४९॥  
भक्तिप्रकाशकुर्विया। कोभक्तिभागीचासागद्विष्टा॥  
नारदानुसाहपकारमोर॥ आदवाभूतिच्यापेटावंसवि  
लया॥५०॥ मुरव्यभागवद्वास्त्रभुर्ण। अवाव्यासासी

(४८)

Rajawade Sanskrit Manuscript Collection  
Digitized by Prof. Dr. P. T. Mehta, M.U.  
Digitized by Prof. Dr. P. T. Mehta, M.U.

१  
९  
उपदेहुन् ॥ प्रागरकर्विलेहवालक्षण ॥ दिनजन्तुद्वा  
या ॥ ५७ ॥ नारदत्तेहवासमान ॥ हे हिउपमा दिसेगोप ॥  
लेचीबीचूँनीरोपण ॥ कृष्णद्वावापणनिरोपि ॥ ५८ ॥ श्वो  
क ॥ भृत्यानां देवन्वरितां इ ॥ यच्च सुखायच्च ॥ सुखवोगे  
वहिसा धनांलाहस्याम् ॥ तनां ॥ ५९ ॥ टीका ॥ हेवा  
पश्चुनिभृतश्च द्वि ॥ सुखदुखद्विषिणमोरि ॥ आतिवदि  
आनादद्विटि ॥ भृतकोटिआकांतु ॥ ६० ॥ त्योहेवापरि

"Join Dots to See the Picture of Sanjeevao Mandal, Dhule and the Vachaspati  
Gopak Parimali, Ambala"

१८

संसाधुजाधिक ॥ हेसावचीमजमानलेदेख ॥ देवच  
रितेहुटिसुखदुख ॥ साधुनिर्देष्वसुखदाता ॥ ५४ ॥ त्या  
हिमाजीनुजसारिख ॥ ज्ञात्योक्तपाकुनिजात्मसुखवा ॥  
तेपैटपिकेनिजात्मसुख ॥ त्यामहिमायालोकाकहान  
कक्षे ॥ ५५ ॥ दिधलियाचुख ॥ सीमागुति ॥ च्युगिहेबणे  
कल्पांगि ॥ जिभाच्युतात्मस्थीति ॥ तुजपासीनिश्चित्त  
नारदा ॥ ५६ ॥ हिवाच्याजावतारहोय ॥ दासासुखदैस ॥

५

(१०)

भयात्तेथे हि अेसे विष मउगा हो। हि न स माये नुजमा  
 जी॥१६॥ नुरवा चाजास होसी॥ देत्य विश्वास दिनुजपा  
 सी॥ रावणे न उनिये काना सी॥ नो नुगु द्यासी स्वये सागे॥१७॥  
 देवरावणे धातले बंदिए॥ तो सरगतु लेचरण बंदि॥ सिरवीरा  
 माचाजास त्रीशुद्धि॥ विरु सकुजा मधीं जासे ना॥१८॥ ज  
 रासंदशीकृष्णाचोवेरि॥ नुसीचाल द्याचाघरि॥ आणी शी  
 कृष्णाचे सफोमासारि॥ आसत्वे थोरि पैनुजि॥१९॥ नावेध

५०

१०४

उनेदिदेवाचे। हेबीसदहि प्यकरयपाचे। त्यासरीहुमेकीर्ग  
 नसचे॥ विषमखसाचेतुजनाहि ॥५६॥ लाकुगीबहिसदोह  
 वासि॥ तेसीनाहितुल्यासाधसी॥ एकसाहिआभीप्राया  
 सी॥ यर्थार्थसीसांगैन॥ ॥५७॥ क। भजंतिधेयादेवान्देव  
 आपितधेवतान्॥ द्युग्रेववासचिवाः॥ साधवोदीनवेत्स  
 कः॥६॥ जेजेसेदेवयागियउजीजति॥ तेसीतेसीक्लेव  
 देति॥ नभजत्यातेवीच्छस्त्रचिति॥ जेसीगगतिदेवाची॥६३॥  
 जेसजेसापुक्षवेट॥ तेसतेसीचायानेटभतेविभजनेट

Joint Project  
 Religions Sevayog  
 Manda, Dhule and the Yesavanta  
 Order  
 Almara Number  
 104



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)